शिक्षा का उत्थान

मिशन शिक्षण संवाद की
मासिक पत्रिका

शिक्षक का सम्मान

शिक्षण संवाद

वर्ष-३ अंक-५

माह : नवम्बर २०२०

मिशन शिक्षण संवाद

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान

Happy Children's Day

शिक्षण संवाद

मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका

वर्ष-३
अंक-५

माह- नवम्बर २०२०

प्रधान सम्पादक
श्री विमल कुमार

प्रबन्ध सम्पादक
श्री अवनीन्द्र सिंह जादौन
प्रांजल सक्सेना

सम्पादक
ज्योति कुमारी
आनन्द मिश्रा

सह सम्पादक
डॉ0 अनीता मुद्गल
आशीष शुक्ल

छायांकन
वीरेन्द्र परनामी

ग्राफिक एवं डिजाइन
आनन्द मिश्र, अफ़ज़ाल अहमद

विशेष सहयोगी
शिवम सिंह, दीपनारायण मिश्र

आओ हाथ से हाथ मिलाएं
बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएं

मिशन शिक्षण संवाद

व्हाट्सएप एवं सम्पर्क नं0
9458278429

ई मेल :
shikshansamvad@gmail.com

वेबसाइट :
www.missionshikshansamvad.com

शुभकामना सन्देश

शिक्षा के क्षेत्र में बार–बार ये प्रश्न खड़ा हो जाता है कि शिक्षकों को कैसा होना चाहिए, उनका व्यवहार कैसा हो? उनका शिक्षा के प्रति क्या लक्ष्य हो? पुस्तकों में लिखी चंद परिभाषाएँ इस प्रश्न का सही उत्तर प्रतिबिंबित नहीं करती हैं? वैसे भी बात यदि बेसिक शिक्षकों की जाए तब परिभाषा को थोड़ा बदलना ही होगा। बेसिक शिक्षकों के पास इस देश की सबसे बड़ी जिम्मेदारी है। उन्हें बच्चों को केवल ज्ञानवान ही नहीं बनाना है अपितु ऐसे शिक्षित करना है कि बच्चे बड़े होकर अपने परिवार को गरीबी तथा अशिक्षा के दलदल से निकाल सकें और यदि वे ऐसा न कर पाए तो उनकी शिक्षा साक्षरता मात्र बनकर रह जाएगी। परिषदीय शिक्षकों के पास एक बड़ा अवसर होता है समाज के एक ऐसे वर्ग को शिक्षित करने का जो रोजमर्रा की जरूरतें पूरी करने में इतना मशगूल है कि अपनी उन्नति का रास्ता ही नहीं खोज पा रहा है।

मिशन शिक्षण संवाद की गतिविधियाँ देखकर प्रसन्नता होती है कि शिक्षक न केवल विद्यार्थियों अपितु उनके अभिभावकों को भी जागरूक करने का निरंतर प्रयास कर रहे हैं। कोरोनकाल में सर्वप्रथम मिशन शिक्षण संवाद की ओर से ही ऑनलाइन क्लास का प्रयास किया गया। बिना अभिभावकों और सामुदायिक सहयोग के ये दुरूह पहल सफल नहीं हो पाती। उसके बाद कोरोनकाल में नियमित रूप से शैक्षिक सामग्री के प्रेषण ने भी नयी राह दिखायी। इससे पता चलता है कि शिक्षक निश्चित परिस्थितियों में ही श्रेष्ठ परिणाम नहीं देता बल्कि आवश्यकता पड़ने पर हर प्रकार की परिस्थिति को अपने अनुकूल बनाने का माद्दा रखता है।

अत्यंत हर्ष का विषय है कि शिक्षकों के प्रयासों से सजी शैक्षिक पत्रिका का प्रतिमाह प्रकाशन किया जा रहा है। मैं आगामी अंक के लिए असीम शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

श्री देवेंद्र गुप्ता
प्राचार्य डायट/उप शिक्षा निदेशक
हरदोई।

सम्पादकीय

शिक्षण संवाद

जब कोई व्यक्ति किसी यात्रा के लिए पहली बार घर से निकलता है तो उसे किसी न किसी मार्गदर्शक की सहायता की आवश्यकता होती है। यदि मार्गदर्शक ने यात्रा की दिशा सही बता दी तो यात्रा मंगलमय होकर सफल होगी और यदि यात्रा की दिशा गलत बता दी तो यात्रा पूरी तो होना सम्भव है लेकिन मंगलमय हो, यह जरूरी नहीं होगा। ठीक इसी तरह हम सभी का जीवन भी एक यात्रा के समान है जहाँ प्रत्येक प्राणी चाहता है कि उसकी जीवन यात्रा में सुख–शान्ति हो जिससे उसका जीवन सतत आनन्दमय आगे बढ़कर परम सत्य को प्राप्त हो। परन्तु यदि जीवन यात्रा का मार्गदर्शक सही राह दिखाने वाला रहा तो यात्रा सुख शांति के साथ मंगलमय होगी अन्यथा दुख और अशांति का कारण बनेगा।

मिशन शिक्षण संवाद आज हम सभी के लिए एक ऐसा मार्गदर्शक है जो हम सभी को जीवन के एक ऐसे पथ की राह दिखाता है जहाँ सुख भी है, शान्ति भी है आनन्द भी, अपने कर्तव्य के प्रति उत्साह और समर्पण भी है। इसी का परिणाम है कि मिशन शिक्षण संवाद परिवार की ओर से हम सभी के लिए मार्गदर्शक के रूप में मासिक पत्रिका ''शिक्षण संवाद'' अनवरत प्रकाशित होती आ रही है। जिसकी शिक्षा, शिक्षण और संस्कारमय विविधता का लाभ हम सभी को प्राप्त होता आ रहा है।

आशा है आप सभी सहयोगी विगत माह के अंकों की भाँति, इस अंक से लाभान्वित होंगे एवं अपनी प्रतिक्रिया सम्पादक टीम तक प्रेषित करेंगे।

बहुत–बहुत धन्यवाद।

आपका

विमल कुमार

अनुक्रमणिका

विषय वस्तु	पृष्ठ सं०
मिशन गीत	1
अनमोल रत्न	2–4
अनमोल बाल रत्न	5
विचारशक्ति–1	6–7
विचारशक्ति–2	8–9
विचारशक्ति–3	10–12
निन्दक नियरे राखिये	13–14
बात महिला शिक्षकों की	15
बाल कविता–1	16
बाल कविता–2	17
बाल कविता–3	18
टी.एल.एम.संसार	19–20
English Medium Diary	21–22
प्रेरक प्रसंग–1	23–24
प्रेरक प्रसंग–2	25
बाल कहानी	26
बाल फिल्म	27
खेल विशेष	28
योग विशेष	29–30
शिक्षण तकनीक	31
सदविचार	32–33
नवाचार	34–35
गतिविधि	36

मिशन गीत

मिशन शिक्षण संवाद एक सागर

मिशन अतुल गहराई वाला एक लहराता सागर है।
नये–नये विचारों को समाहित किये एक गागर है।।
बूँद के जैसे निकले हम, किस बादल की गोद से,
अंधेरों में गुमनामी के, रह ना पाते हम आबाद।
अंधेरे में किरण के जैसे, मिला हमें मिशन संवाद,
पंख मिले पंछी को, उड़ा वो, पीछे रह गया अवसाद।।
मिशन सीप में गिर कर बूँदें, चमकें बनकर के मोती,
मिलती ही हैं राहें, जिनको चाह मंजिल की होती।।
मिशन से हम हैं, हमसे मिशन है, यही आज सच्चाई है,
क्या करें? कैसे करें? यह बात मिशन ने बताई है।।
हर चुनौती से लड़ने की सीख भी सिखाई है,
नये–नये अनुसंधानों की राह हमें दिखलाई है।
जो कोनों में दबे हुए थे उनकी की अगुआई है,
''मिशन शिक्षण संवाद'' में एक अतुल गहराई है।।

पूनम गुप्ता,
सहायक अध्यापिका,
प्राथमिक विद्यालय धनीपुर (अंग्रेजी माध्यम),
विकास खण्ड–धनीपुर,
जनपद–अलीगढ़।

बेसिक शिक्षा के अनमोल रतन

माह के अनमोल रत्नों को नमन

४७८ नमिता पंत (स०अ०) राजकीय प्रा०वि० जसपुर खुर्द, ब्लॉक – काशीपुर, उधम सिंह नगर, उत्तराखंड
https://shikshansamvad-blogspot-com/2020/08/blog&post_916-html

४७९ ज्योत्सना सिंह, पू०मा०वि० कशिया ब्लाक– मूरतगंज, जनपद–कौशाम्बी उ० प्र०
https://shikshansamvad-blogspot-com/2020/08/blog&post_100-html

४८० पवन कुमार सिंह शासकीय पूर्व माध्यमिक विद्यालय, पोटिया, विकासखंड : धमधा, जिला : दुर्ग, छत्तीसगढ़
https://shikshansamvad-blogspot-com/2020/08/blog&post_589-html

४८१ अशोक कुमार साहू शासकीय प्राथमिक शाला सगनी, विकास खण्ड – धमधा, जिला – दुर्ग, छत्तीसगढ़
https://shikshansamvad-blogspot-com/2020/08/blog&post_627-html

४८२ राहुल देव, पूर्व मा० विद्यालय रायपुर, निघासन, जनपद– लखीमपुर खीरी, उ०प्र०
https://shikshansamvad-blogspot-com/2020/08/blog&post_244-html

४८३ दिव्या पूरी प्रा० विद्यालय पल्टा, चिलकहर जनपद– बलिया, राज्य – उ०प्र०
https://shikshansamvad-blogspot-com/2020/09/blog&post_7-html

४८४ अर्पण कुमार आर्य (सहायक अध्यापक) पूर्व माध्यमिक विद्यालय लावाखेड़ा तालिब हुसैन, विकास क्षेत्र– नवाबगंज, जनपद– बरेली
https://shikshansamvad-blogspot-com/2020/09/blog&post_76-html

४८५ अनिता श्रीवास्तव, अंग्रेजी माध्यम प्राथमिक विद्यालय सरैया, ब्लाक– चरगावां, जनपद–गोरखपुर
https://shikshansamvad-blogspot-com/2020/09/blog&post_56-html

४८६ जितेन्द्र सिंह【I-V】पूर्व मा० विद्यालय फैज़नगर ब्लॉक – भुता, जनपद – बरेली राज्य – उत्तर प्रदेश
https://shikshansamvad-blogspot-com/2020/09/a-html

४८७ छाया पाण्डेय (प्र०अ०) प्रा०वि० छतमी, डीघ, भदोही उत्तर प्रदेश
https://shikshansamvad-blogspot-com/2020/09/blog&post_82-html

४८८ हरीश चंद्र तिवारी (इ०अ०) संविलियन विद्यालय पसियापुरा ब्लॉक – भगतपुर टांडा, जनपद – मुरादाबाद, राज्य – उत्तर प्रदेश
Https://shikshansamvad-blogspot-com/2020/09/blog&post_87-html

४८९ सारिका सक्सेना इं०प्र०अ० उच्च प्राथमिक विद्यालय पथरा, विकास क्षेत्र – आलमपुर, जाफराबाद, जनपद – बरेली
https://shikshansamvad-blogspot-com/2020/09/blog&post_447-html

४९० अभिनेन्द्र प्रताप सिंह प्रा० वि० शाहपुर टिकरी, ब्लॉक –मंझनपुर, जनपद – कौशाम्बी, राज्य – उ.प्र.
https://shikshansamvad-blogspot-com/2020/09/blog&post_981-html

४९१ सुरेश सिंह डसीला (स०अ०) राजकीय जूनियर हाईस्कूल बुज्याड, ब्लॉक– गंगोलीहाट, जनपद– पिथौरागढ़, राज्य– उत्तराखंड,
https://shikshansamvad-blogspot-com/2020/09/blog&post_984-html

४९२ रामौतार सिंह (इ०प्र०अ०) पूर्व माध्यमिक विद्यालय इब्राहीमपुर साधो, विकास क्षेत्र – आकू (नहटौर) जनपद – बिजनौर
https://shikshansamvad-blogspot-com/2020/09/blog&post_510-html

४९३ अर्चना वार्ष्णेय इं.प्र.अ. संविलियन विद्यालय पैगाभीकमपुर, बिसौली (बदायूं) उत्तर प्रदेश।
https://shikshansamvad-blogspot-com/2020/09/blog&post_650-html

४९४ निवेदिता उपाध्याय प्राथमिक विद्यालय कर्म डांडा, ब्लॉक – मिल्कीपुर, जनपद –अयोध्या, राज्य–उत्तर प्रदेश
https://shikshansamvad-blogspot-com/2020/09/blog&post_240-html

४९५ अनिल कुमार वर्मा प्रभारी प्रधानाध्यापक प्राथमिक विद्यालय गुमानी खेड़ा, मोहनलालगंज, जनपद– लखनऊ, उत्तर प्रदेश
https://shikshansamvad-blogspot-com/2020/09/blog&post_503-html

४९६ चित्रसेन (प्रधानाध्यापक) प्राथमिक विद्यालय ढकिया डाम, विकास क्षेत्र– शेरगढ़, जनपद– बरेली
https://shikshansamvad-blogspot-com/2020/10/blog&post_85-html

मिशन शिक्षण संवाद

अनमोल बाल रत्न

छात्रा का नाम-
सुष्मिता द्विवेदी

कक्षा- 8

विद्यालय का नाम-
उ० प्रा० वि० चित्रवार

क्षेत्र व जनपद- मऊ (चित्रकूट)

प्रतियोगिता का नाम- परवाज़- 14

प्रतियोगिता का स्तर राज्य स्तरीय

स्थान- स्वरचित कविता का पाठ करने वाली प्रथम बालिका

मार्गदर्शन- आर० के० शर्मा

उ० प्रा० वि० चित्रवार

संकलन मिशन शिक्षण संवाद

विचारशक्ति–1

शिक्षक : राष्ट्र की अनमोल निधि

शिक्षण संवाद

किसी भी राष्ट्र की तरक्की में, उस राष्ट्र के शिक्षकों का सबसे बड़ा योगदान होता है। देश की भावी पीढ़ी को तैयार करने की जिम्मेदारी सबसे अधिक शिक्षकों के कंधों पर ही होती है। हालाँकि बच्चों का सर्वांगीण विकास अभिभावक, शिक्षकों और समाज पर निर्भर करता है। आज जब समाज में नैतिक मूल्यों का अभाव है तो शिक्षकों को मानसिक रूप से मजबूत होने की आवश्यकता है। आज के समय में शिक्षकों के समक्ष चुनौतियाँ अधिक हैं। आज के इस युग में बच्चों को शिक्षित बनाना सबसे कठिन कार्य है। मैं एक सरकारी विद्यालय में शिक्षिका हूँ और लगभग 5 वर्षों से विभिन्न प्रकार की चुनौतियों का सामना कर रही हूँ। यदि हमें समाज में एक सकारात्मक बदलाव लाना है तो शिक्षकों को समझना बहुत आवश्यक है। समाज में बार–बार सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कर्तव्यनिष्ठा पर सवाल उठाए जाते हैं। सोशल मीडिया जैसे फेसबुक, ट्विटर पर वर्षों पुरानी वीडियो दिखाकर शिक्षकों की योग्यता पर भी सवाल खड़े किए जाते हैं। एक शिक्षक के जीवन में प्रतिदिन कई चुनौतियाँ आती हैं जैसे बच्चों की अनुपस्थिति, समय प्रबंधन, बहु स्तरीय कक्षाएँ, संसाधनों का अभाव, बच्चों की विशेष आवश्यकताएँ, प्रशासनिक कार्य इत्यादि।

एक शिक्षक के कंधों पर केवल एक कक्षा या विद्यालय की जिम्मेदारी नहीं बल्कि पूरे समाज के निर्माण की जिम्मेदारी होती है। शिक्षक एक दीपक की तरह होते हैं, जो खुद प्रज्ज्वलित होकर सभी को रास्ता दिखाते हैं। आवश्यकता है कि शिक्षकों की इस अंदरूनी लौ, इस रोशनी को किसी भी कीमत पर बुझने ना दिया जाए। शिक्षकों को प्रतिदिन नई–नई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है इसलिए उन्हें निरंतर अपने लिए प्रेरणा का स्रोत ढूँढते रहना चाहिए।

एक आशावान और प्रेरित शिक्षक ही अपने बच्चों का सर्वांगीण विकास सुनिश्चित कर सकता है। दिन प्रतिदिन शिक्षकों के समक्ष जिम्मेदारियों की संख्या बढ़ती रहती है। आवश्यक है कि उन्हें प्रोत्साहित कर उनके प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाया जाए। अधिकांश सरकारी विद्यालयों में शिक्षकों का अभाव तथा अत्याधिक प्रशासनिक कार्यों का बोझ एक बड़ी समस्या है। बच्चों को पढ़ाने का समय न मिलना तथा शिक्षकों का विद्यालय और घर में गैर शैक्षणिक कार्यों में व्यस्त रहना भी चिंताजनक विषय है।

जब शिक्षकों को कक्षाओं में पढ़ाने का समय ही नहीं मिलेगा तो शैक्षिक गुणवत्ता में गिरावट स्वभाविक है। शिक्षकों द्वारा किए गए असंख्य कार्यों को नजरंदाज कर शिक्षकों

को बच्चों के प्रर्दशन के आधार पर आँका जाता है। बच्चों को सही मायने में शिक्षित बनाने में गुरू, माता–पिता और समाज सभी का योगदान होता है। किन्तु मात्र कुछ शिक्षकों के गैर जिम्मेदाराना व्यवहार के कारण सभी शिक्षकों के प्रति गलत धारणा हमारा समाज बना लेता है और उसी का प्रचार–प्रसार करना अपनी शान समझता है। इस प्रकार के लोग तो हर जगह मिलते हैं। आवश्यक है कि समाज उन कुछ लोगों को छोड़कर जो अधिक संख्या में शिक्षक कर्तव्यनिष्ठा से अपना कार्य कर रहे हैं, उनके मान सम्मान का ख्याल रखें तथा समाज के वही लोग यदि समाज और देश के उत्थान में अपना योगदान दें तो ऐसा बोलने की नौबत कभी नहीं आयेगी। शिक्षकों को ईश्वर से अधिक महत्व देना हमारे देश की संस्कृति है और इस संस्कृति को धरोहर के रूप में सहेजकर रखना सभी देशवासियों की जिम्मेदारी है।

हम शिक्षक प्रतिदिन अपनी शालाओं में आने वाले बच्चों को नई–नई उड़ान भरने के लिए तैयार करते हैं। हम और हमारे बच्चे निरंतर चुनौतियों का सामना करते हैं। लेकिन हौसलों की उड़ान है.... कहाँ आसानी से हार मानती है। हम गिरते हैं, गिरकर सँभलते हैं और फिर एक नई उड़ान भरने को तैयार हो जाते हैं, हम शिक्षक तो ऐसे ही होते हैं।

हमारा गिरकर उठना हमारे बच्चों के लिए बहुत आवश्यक है क्योंकि उसी से हमारे बच्चों में जाग्रत होगा साहस, आत्मविश्वास और सकारात्मक दृष्टिकोण। बच्चों को अपने शिक्षकों पर अटूट विश्वास होता है। हम शिक्षकों को, बच्चों की प्रतिभा को पहचान कर, उन्हें उनके लक्ष्य के प्रति जागरूक बनाना है तथा उसके लिए एक मार्गदर्शक की भूमिका भी निभानी है। नित नए नवाचारों के माध्यम से बच्चों में नवीन ऊर्जा का संचार करना, शिक्षकों का एक महत्वपूर्ण कार्य है।

न रूके, न थके, बस चलता रहे,
समाज का ये है रक्षक। देश के
भविष्य का निर्माण करें जो, वो
होता है शिक्षक।

(यह लेख सोशल मीडिया व अखबार में प्रकाशित कुछ नकरात्मक खबरों के आधार पर लिखा है।

सुमन शर्मा
प्रभारी प्रधानाध्यापक
पूर्व माध्यमिक विद्यालय मांकरौल,
विकास खण्ड – इगलास
जनपद अलीगढ़

विचारशक्ति–2

शिक्षा और शिक्षक

शिक्षण संवाद

सीखना एक सतत् प्रक्रिया है अर्थात मनुष्य जीवन से मृत्युपर्यन्त तक हमेशा कुछ न कुछ सीखता है। जैसा कि विवेकानन्द जी ने कहा था कि जब तक जीना है तब तक सीखना है। सीखने की कोई उम्र नहीं होती। समाज में ऐसे अनेक लोग हैं जिन्होंने ढलती उम्र में ऐसा कुछ कर दिखाया, दिखा रहे हैं कि अच्छे–अच्छे उनके जोशो–खरोश के आगे नतमस्तक हो जाएँ।

कुछ उदाहरण प्रस्तुत कर रही हूँ। केरल की 98 वर्षीय कात्यायनी अम्मा ने कक्षा 4 की परीक्षा व साक्षरता 98% प्राप्तांकों के साथ पूर्ण की और वह जीवित रहने तक पढ़ना चाहती हैं। 103 वर्षीय मान कौर जिन्हें ''चंडीगढ़ का चमत्कार'' कहा जाता है एथलीट के रूप में उन्होंने 93 की उम्र में दौड़ना शुरू किया और अभी 103 वर्ष की उम्र में नारी शक्ति पुरस्कार ग्रहण किया।

देवास की बागली की 78 वर्षीय विद्या बाई ने कंप्यूटर शिक्षण प्राप्त किया। यानी कि जीवन के किसी भी मोड़ पर हम कुछ भी सीख सकते हैं। हमने सीखने की उम्र खुद ही तय कर रखी है जैसे कि पढ़ाई–लिखाई, गाड़ी या साईकिल चलाना, तैराकी सीखना, कंप्यूटर या मोबाइल चलाना। इन सबके लिए हमारे मन में यही धारणा है कि शुरुआती दौर में इन्हें सीख लो तो ठीक लेकिन बढ़ती उम्र के साथ इनको सीखने की गुंजाइश कम हो जाती है। लोग कुछ भी कहें या हतोत्साहित करें फिर भी दुनिया में कुछ ऐसे लोग हैं जो अपने अंदर सीखने की इच्छा को मरने नहीं देते और उम्र के ऐसे पड़ाव में नई चीजें सीख जाते हैं जो दूसरों के लिए नामुमकिन के बराबर होता है।
सीखने वाला उम्र, बाधा, जाति, भाषा और देश को नहीं देखता है, वह तो सीखना और करना जानता है।

हमारे माननीय प्रधानमंत्री जी इतनी उम्र में भी देश को चलाने का उत्साह कायम रखे हैं और स्वयं भी योग करके जीवन में स्वस्थता को प्राप्त किये हुए हैं। अभी वर्तमान में अमेरिका के नवनिर्वाचित 78 वर्षीय राष्ट्रपति श्री जो बाइडेन के जिक्र के बिना बात अधूरी रह जाएगी। कई वर्षों के राजनीतिक संघर्षों व जीवन में उथल–पुथल के बावजूद हिम्मत नही हारी और उम्र के इस पड़ाव में भी राष्ट्रपति बनने व देश को चलाने की ऊर्जा व स्फूर्ति रखते हैं।

नई–नई चीजें जानना है इससे जीवन में गतिशीलता आती है। स्वयं का विकास होता है। मैंने लॉकडाउन में लेखन शुरू किया पहले भी लिखती थी पर बहुत कम, पर अब टेक्नोलॉजी का सहारा लेकर लिखती रहती हूँ, पढ़ती हूँ ज्ञान समृद्ध होता है। जीवन में सकारात्मकता बनी रहती है, आनंद मिलता है। तो आत्मविश्वास बनाये रखना है, हतोत्साहित नहीं होना है क्योंकि कुछ तो लोग कहेंगे लोगों का काम है कहना.....
हम सबको ये संकल्प लेना चाहिए कि जिस भी क्षेत्र में हमारी रुचि हो उसे सीखना है

उम्र बाधा नहीं है आगे बढ़ना है तो बढ़ना है और जीवन को उत्साहपूर्ण बनाना है। कुछ स्वरचित पंक्तियों के साथ उत्साह सृजन करना चाहूँगी.....

थको नहीं, झुको नहीं
अडिग रहो, गिरो नहीं
स्तम्भ हो, कुशा नहीं
तरंगिणी ,प्रवाहिनी
सलिल बनो, स्मित रहो
मानव हो तुम, कुशाग्र बनो
जीवन है गर, जीवट रखो
जीवित रहो, थमो नहीं
सजग रहो, जमे रहो
जीवंत बनो, गतिशील रहो
आगे बढ़ो, रुको नहीं.....
आगे बढ़ो, रुको नहीं....

अंशू सिंह,
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय भिक्कनपुर,
विकास खण्ड–रजापुर,
जनपद–गाजियाबाद।

विचारशक्ति–3

मिशन शिक्षण संवाद क्या है?

शिक्षण संवाद

क्या हम मिशन शिक्षण संवाद के उद्देश्य जान सके हैं?
मिशन शिक्षण संवाद क्या है?
यह कैसे काम करता है? इसमें कौन जुड़ सकता है?
ऐसे कई प्रश्न हैं जो कभी–कभी समूहों में नए साथियों द्वारा पूछे जाते हैं और उनका यथा उचित जबाब साथियों द्वारा दिया भी जाता है लिखित आलेख भी समूह पर कई बार प्रेषित किये गए हैं जिनमें उद्देश्य से लेकर सभी होने वाले कार्यों का ब्यौरा उपलब्ध है। पर अभी भी मिशन से जुड़े नए साथियों के साथ कई पुराने साथी तक मिशन शिक्षण संवाद की वास्तविक अवधारणा से अंजान ही हैं। सबसे पहले तो यह स्पष्ट कर लें कि मिशन शिक्षण संवाद कोई संगठन नहीं है बल्कि यह एक मूर्त विचार है। जिसका उद्देश्य मात्र तीन शब्दों में छिपा है शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान और मानवता का कल्याण।

मिशन शिक्षण संवाद की स्थापना के समय सरकारी बेसिक शिक्षा में लोगों के अविश्वास और सरकारी शिक्षकों के प्रति लोगों की नकारात्मक सोच को आधार बनाकर एक कल्पना की गई थी कि हम सभी सकारात्मक विचार वाले शिक्षक अपने शैक्षिक और सामाजिक कार्यों के प्रस्तुतिकरण द्वारा आम जनमानस के मन में एक विश्वास उत्पन्न करने का प्रयास करेंगे चाहे वह सफल हों या न हों। वर्ष 2015 से शुरू किए गए प्रयास काफी हद तक सफल भी रहे। चूंकि स्वयं के प्रयास का प्रोत्साहन मिलना हर व्यक्ति को अच्छा लगता है अतः शिक्षा में अच्छा कर सकने वाले हर व्यक्ति का जुड़ाव किसी न किसी माध्यम से इस मंच से होता गया और उनके द्वारा किये गए प्रयासों को देखकर जो साथी अभी तक निष्क्रिय थे उनमें भी कुछ करने का उत्साह और स्वयं को प्रस्तुत कर प्रोत्साहन की चाह जाग गयी। यह पहला चरण था जिसमें हम सब शत प्रतिशत सफल रहे। पर मिशन शिक्षण संवाद का उद्देश्य क्या इतना संक्षिप्त था? शायद नहीं।

मिशन शिक्षण संवाद का उद्देश्य किसी एक व्यक्ति या कई व्यक्तियों को केवल मंच देना मात्र ही नहीं था मिशन की अपेक्षा थी कि हम अपने शैक्षिक कार्यों द्वारा समुदाय का

विश्वास हासिल कर सकें। जब हमारे किसी साथी के किसी कार्य का समाचार किसी अखबार में, किसी वेबपोर्टल या न्यूज चैनल आदि में प्रकाशित होता है तो उस साथी शिक्षक के इष्ट मित्र, रिश्तेदार और उसके पास पड़ोस के लोग उसे सोशल मीडिया पर और व्यक्तिगत रूप से ढेरों बधाई प्रेषित करते हैं। पर यहाँ हमें यह भी मूल्यांकन करना आवश्यक हो जाता है कि इस समाचार से हमारे विद्यालय और कार्यक्षेत्र के अभिभावकों का विश्वास हम पर कितना बढ़ा है? क्या समुदाय के लोग भी अध्यापक की इस उपलब्धि को अपने छात्र की प्रगति से जोड़कर गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं? मुझे सदैव यह लगता है कि अगर अध्यापक की जगह छात्रों की उपलब्धि के समाचार छपें तो न सिर्फ सम्पूर्ण गाँव में लोग इस समाचार को हाथोंहाथ लेंगे बल्कि विद्यालय में शिक्षा के प्रति उनका विश्वास और बढ़ेगा साथ ही छात्रों में आगे बढ़ने और खबर बनने की एक सकारात्मक होड़ शुरू होगी। किसी ग्रामीण क्षेत्र के गरीब छात्र की फोटो और खबर अखबार में आ जाना उस गाँव की सबसे बड़ी उपलब्धि होती है।

मिशन शिक्षण संवाद सदैव अपेक्षा करता है कि अगर एक साथी अपने कार्यों की पहिचान द्वारा किसी मंच के माध्यम से आगे आया है तो वह अगली बार अपने नए साथी को आने के लिए प्रेरित करे। पर यहाँ कहीं न कहीं हम अभी अपेक्षित सफलता हासिल नहीं कर पा रहे हैं क्योंकि अभी भी हम अध्यापक मानव स्वभाव के वशीभूत होकर स्वयं के प्रस्तुतिकरण का अवसर हर बार हासिल करना चाहते हैं। किसी कार्यशाला के आयोजन की खबर मिलते ही अगर हमारे मन में पहला प्रश्न आता है कि अबकी बार किस नये साथी को भेजना है तो निश्चित ही हम मिशन शिक्षण संवाद की विचारधारा को जी रहे हैं और अगर हमारे मन में नए साथी के साथ स्वयं के भी जाने का विचार आता है तो अभी हमें मिशन को और अधिक गहराई से समझने की जरूरत है और अगर हमें केवल अपने जाने की चिंता होती है तो अभी हम मिशन शिक्षण संवाद को जान ही नहीं पाए हैं।

जीवन में अध्यापक होना अन्य पेशे से भिन्न है। अगर सरकार 7–8 घंटे विद्यालय में निर्धारित निर्देशों के अनुक्रम में छात्रों को निर्धारित पाठ्यक्रम पूरा करने के बदले हमे एक वेतन दे रही हो तो निश्चित ही हम उसके एक कर्मचारी मात्र हैं और उनके दिए कार्यों को पूरा करना हमारी जिम्मेदारी है। इसे हम अपनी उपलब्धि के तौर पर नहीं गिना सकते हैं परंतु अगर हमने इन कार्यो के अतिरिक्त अपने छात्रों, अपने विद्यालय, अपने परिवेश और समग्र मानवता के लिए कुछ सोचा है और किया है तो वह निश्चित ही प्रशंसनीय है और वह आपके श्रेष्ठ अध्यापक होने का प्रमाण है और उसका प्रचार–प्रसार विभिन्न माध्यमों से होना चाहिए ताकि समग्र समाज के शिक्षा से जुड़े लोग प्रेरित

होकर उस सकारात्मक रास्ते पर आगे बढ़ें। अगर आपने किसी ऐसी शिक्षण विधा या तकनीकी की खोज की है जिससे छात्रों के जीवन में कोई परिवर्तन परिलक्षित हुआ है तो उसका प्रचार–प्रसार होकर उसे अधिकतम लोगों तक जाना चाहिए जिसके लिए मिशन शिक्षण संवाद सदैव तत्पर है।

विभाग द्वारा दिए गए कार्यों को ही अपनी उपलब्धि के रूप में सोशल मीडिया के रूप में प्रचारित करने से हमें बचना होगा। हमें समझना होगा कि सरकारी निर्देशों को पूरा करना हमारी बाध्यता है और इसमें कुछ नया नहीं है। एक अध्यापक होने के नाते हमें तो अच्छे नागरिकों का निर्माण कैसे हो? कक्षा–कक्ष में आनंददायी पठन–पाठन का माहौल कैसे बने? गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का लक्ष्य कैसे प्राप्त हो? हमारे विद्यार्थी समाज के श्रेष्ठ नागरिक कैसे बनें और अच्छे समाज के निर्माण में हम अपना योगदान कैसे दें? इस पर ध्यान केंद्रित करना होगा जिसके लिए एक कार्य योजना का निर्माण करना होगा उस पर आगे बढ़कर लक्ष्य प्राप्ति के लिए प्रयास करने होंगे फिर समाज अपने आप आपकी तारीफ करने लगेगा, साथी शिक्षक अपने आप आपके प्रयोगों और कार्यों की चर्चा अन्य शिक्षकों से करने लगेंगे, कभी कोई शिक्षाधिकारी आपके विद्यालय में आएँगे तो निश्चित ही आपके कार्यों को देखकर उसका उदाहरण अन्य विद्यालयों में जाकर देंगे और मीडिया स्वयं चलकर आप तक आएगी।

मिशन शिक्षण संवाद में सक्रिय साथी 24x7 कार्य करके शिक्षा उपयोगी कार्यों को आगे बढ़ाने में अपना योगदान दे रहे हैं। इसके लिए वह बधाई के पात्र हैं पर इसके साथ ही सभी को मिशन के उद्देश्यों को आत्मसात भी करना होगा। बड़े मंच से मिली शोहरत की चकाचौंध में अक्सर नए मौके और अवसर मिलते ही रहते हैं जिनमें भटककर मिशन शिक्षण संवाद विचारधारा के मूल उद्देश्य खो सकते हैं। कई बार हम जीवन में मिले अल्पकालिक बेहतरीन मौके नहीं खोना चाहते हैं क्योंकि वह हमें हमारे कार्यों की पहिचान और प्रसिद्धि दिलाने वाले साबित होते हैं। इसलिए उन्हें पूरा करने के लिए कभी–कभी हम जीवन के बड़े उद्देश्य और अपनी मजबूत विचारधारा से भी समझौता करने लगते हैं और कई बार हम अल्प एवं प्रत्यक्ष लाभ दिखाई देने वाली नई विचारधारा के साथ खो जाते हैं। कई बार साथी शिक्षक अक्सर अखबार की सुर्खियों और सोशल मीडिया के कमेंट को हो जीवन की वास्तविक उपलब्धि मान लेने की भूल कर बैठते हैं और पुरस्कारों की दौड़ में शामिल होकर शिक्षा के मूल उद्देश्य और शिक्षकत्व की भावना से दूर हो जाते हैं। इससे हमें स्वयं को बचाना होगा। आपके कार्यों की पहिचान अगर सहज रूप से हो रही है तो आप पुरस्कार के लिए प्रयास करते रहें पर केवल पुरस्कार के लिए ही काम करना गलत है।

शिक्षा का उद्देश्य एक शिक्षित सांस्कारिक नागरिक के निर्माण द्वारा समग्र मानवता का कल्याण होता है और इसे किसी प्रदर्शन की बजाय जीवन में जीने की जरूरत होती है। अगर हम अध्यापक के रूप में अपना जीवन जीना पसंद करते हैं तो हमको अपनी सोच को विस्तृत करना ही होगा और अगर हम विभागीय कर्मचारी बनकर खुश रहना चाहते हैं तो हमारे सभी कृत्य वर्तमान स्थितियों तथा सोच के अनुकूल और जायज हैं। तय हमें करना है कि हमें शिक्षक बनना है या कर्मचारी।

अवनीन्द्र सिंह जादौन,
संयोजक मिशन शिक्षण संवाद, उत्तर प्रदेश।

निन्दक नियरे राखिये

शिक्षकों के बीच बढ़ता वैचारिक मतभेद

शिक्षण संवाद

नित नई राहें दिखाते, ज्ञान की बातें सिखाते।
ज्ञान अमृत का पिलाकर, प्यास मन की बुझाते।।

प्राचीन काल से ही गुरु को साक्षात ईश्वर की श्रेणी में माना जाता है। गुरु और शिष्य का संबंध अद्वितीय एवं पूजनीय है। गुरु के मार्गदर्शन के बिना हम किसी भी प्रकार की शिक्षा नहीं प्राप्त कर सकते। सभी प्रकार के ज्ञान को प्राप्त करने के लिए गुरु पर निष्ठा करनी आवश्यक होती है और उसी के बताए मार्ग पर चलना होता है। गुरु समाज के लिए दर्पण होता है। गुरु की शिक्षा को अपनाकर शिष्य अपना भविष्य सँवारता है। शिष्य, गुरु द्वारा किये गये कार्य को भली–भाँति मन मस्तिष्क में उतारता है। गुरु को आदर्श मानकर शिक्षा ग्रहण करता है। किन्तु आज बदलते परिदृश्य में देखने और समझने में यह आया है कि विद्यालयों में कार्यरत कतिपय शिक्षकों के बीच ही आपसी वैचारिक मतभेद बढ़ते जा रहे हैं। एक–दूसरे पर अनावश्यक दोषारोपण किया जाता है। अपने पद की गरिमा के अनुरूप कार्य और दायित्व को भूलते जा रहे हैं। यह बहुत बड़ी विडंबना है ज्ञान का भंडार रखने वाला, पथ –प्रदर्शक के रूप में उचित राह दिखाने वाला शिक्षक स्वयं ही भ्रमित हो रहा है। विद्यालय स्तर पर जब सभी शिक्षकों का एक ही लक्ष्य है – छात्र–छात्राओं को शिक्षित करना, उनके भविष्य को उज्जवल करना, उनको संस्कारों से आच्छादित करना तो फिर वैचारिक मतभेद क्यों? यह एक सोचनीय विषय है। आखिर ऐसी कौन सी विसंगतियाँ आ गई हैं जिसके कारण शिक्षक एक–दूसरे के विचारों से सहमत नहीं हैं। जब शिक्षक स्वयं को इस तरह के मतभेदों से बचाव नहीं कर पा रहा है तो वह उन छात्रों, नौनिहालों बच्चों को क्या शिक्षा देगा? यह एक गंभीर और सोचनीय विषय है। यह बहुत ही असंतोषजनक स्थिति है। इस तरह का वातावरण जब विद्यालय में सृजित होगा तो बच्चों पर निश्चित ही कुप्रभाव पड़ेगा। फिर परिवार और समाज व्यवस्थित एवं संस्कारित नहीं रह पायेगा। मेरा व्यक्तिगत मानना है कि छात्रों का आदर्श और अनुकरणीय बनने के लिए शिक्षक को समर्पित होकर शिक्षण कार्य करने पर विशेष ध्यान देना होगा जिससे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा छात्रों को प्राप्त हो सके। छात्र हित सर्वोपरि रखकर ही शिक्षकों को काम करना चाहिए क्योंकि गुरु की महिमा अनन्त है, अथाह ज्ञान का भण्डार है।

गुरु की ऊर्जा सूर्य–सी, अम्बर–सा विस्तार।
गुरु की गरिमा से बड़ा, नहीं कहीं आकार।।
गुरु का सद्सानिध्य ही, जग में हैं उपहार।
प्रस्तर को क्षण–क्षण गढ़े, मूरत हो तैयार।।
गुरु की पारस दृष्टि से, लौह बदलता रूप।
स्वर्ण कांति–सी बुद्धि हो, ऐसी शक्ति अनूप।।
गुरु के अंदर ज्ञान का, कल–कल करे निनाद।
जिसने अवगाहन किया, उसे मिला मधु–स्वाद।।

प्रतिमा उमराव,
सहायक अध्यापक,
उच्च प्राथमिक विद्यालय अमौली (1–8),
विकास खण्ड–अमौली,
जनपद–फतेहपुर।

बात महिला शिक्षकों की

बेटियों की पढ़ाई में क्रांतिकारी परिवर्तन

शिक्षण संवाद

बात महिला शिक्षकों की यदि की जाए तो आज के सामाजिक परिवेश में बहुत व्यापक है, महिला शिक्षिकाओं के लिए अपने मातृत्व धर्म के साथ साथ जीवन के इस चुनौतीपूर्ण कार्य को पूरा करने का सुअवसर मिला है, किंतु आज के इस परिवेश में समाज मे बहुत सी कठिनाइयों का सामना करते हुए अपनी कर्मभूमि के लिए कर्तव्यनिष्ठ होकर काम कर रही हैं। उनको शत–शत नमन है, इस पितृ सत्तात्मक समाज की सोच से शिक्षिकाएँ भी नहीं बच पातीं। विद्यालय व समाज के लोगों की टिप्पणी का सामना करती हैं। शिक्षिकाओं को सुदूर विद्यालय मिलने पर यात्रा सम्बन्धी कठिन मुश्किल का सामना करना पड़ता है लेकिन हम गर्व के साथ कह सकते हैं कि इतनी कठिनाइयों के बाद भी जिस प्रकार अपने कर्तव्यों का पालन कर रही हैं वह सराहनीय है। बात महिला शिक्षिकों की जाए तो वो विद्यालय से जुड़ी समस्त गतिविधियों, क्रियाकलापों, सामाजिक कार्यों में बढ़चढ़ कर हिस्सा ही नहीं ले रहीं अपितु अपना, अपने विद्यालय, अपने विकासखंड व जनपद का नाम रोशन कर रही हैं। समाज की सोच में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने में भी शिक्षिकाएँ अहम रोल निभा रही हैं। लोगों में बेटियों को लेकर उनकी पढ़ाई, उनके विवाह की सही उम्र आदि पर फैसला और जो बदलाव दिख रहा है। वह इन्हीं महिला शिक्षिकों की मेहनत व लगन का परिणाम है। प्रणाम है ऐसी नारी शक्ति को और अंत मे बस यही कहना है कि–

तू रूप है ममता की
तू आधार है मानवता की
नमन है तेरी कर्तव्यपरायणता को
तू अभिमान है इस समाज की

प्रदीप कुमार तिवारी, प्रधानाध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय सिंगरों,
विकासखंड– फखरपुर,
जनपद– बहराइच

बाल कविता-1

शिक्षण संवाद

बालमन

समाज का अस्तित्व है वह बालमन,
निरपेक्ष है वह बालमन,
निश्चिंत है वह बालमन,
वास्तविक है वह बालमन,
आनंद में है वह बालमन।
स्वाभाविकता का प्राण है बालमन,
अस्तित्व की पहचान है वह बालमन,
अद्वितीय अस्मिता की शान है वह बालमन,
साक्षात ईश्वर का भान है वह बालमन।
मानवता के ज्ञान की पहचान है वह बालमन,
प्रेम का अद्भुत, अतुलित भंडार है वह बालमन,
आध्यात्मिकता का प्रत्यक्ष प्रमाण है वह बालमन,
तृप्तित जीवन की सीख है वह बालमन,
घर शिक्षक का आसमान है वह बालमन।

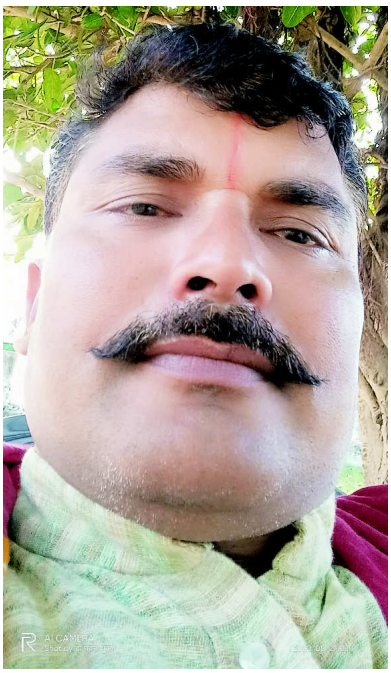

डॉ0 पवन कुमार शुक्ल,
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय नौडेरा प्रथम,
विकास खण्ड–गौरा,
जनपद–प्रतापगढ़।

उम्मीद

नन्हें–मुन्ने प्यारे बच्चों
अब न देर करेंगे हम।
एक बार फिर खुलेंगे स्कूल
फिर नभ में रंग भरेंगे हम।।
ऊब गए अब घर बैठे हम
अब विद्यालय जाएँगे हम।
खेलेंगे और खूब पढ़ेंगे
नया जीवन बनायेंगे हम।।
याद आती स्कूल की कक्षा
याद आती सुंदर फुलवारी।
याद आती बच्चों की मस्ती
प्यार भरी वो किलकारी।।
बच्चों की वो तू–तू, मैं–मैं
और शिकायत करना दिनभर।
कभी हँसी कभी गुस्सा आता था
याद आती वो बातें रह–रह कर।।
मन में है एक सुखद भरोसा
फिर वो समय आएगा।
बीतेगा ये बुरा वक्त भी
फिर अच्छा पल आएगा।।
बजेगी फिर स्कूल की घंटी
गूँजेंगे प्रार्थना के मधुर स्वर।
फिर गुलजार होंगे विद्यालय
आएगी खुशियों की लहर।।
खिलौने सारे पूछ रहे हैं
पूछ रहा सारा आँगन।
कब आएँगे प्यारे बच्चे
कब झूमेगा मेरा मन।।
इक दिन जरूर आएगा
वो दिन खुशियों वाला।
जिस दिन खुशी–खुशी खोलेंगे
हम विद्यालय का ताला।।

सीता टम्टा,
प्रधानाध्यापक,
राजकीय प्राथमिक विद्यालय सारेग्वाड़,
विकास खण्ड–गैरसैंण,
जनपद– चमोली,
उत्तराखण्ड।

बाल कविता-3

शिक्षण संवाद

देखो–देखो बन्दर आया।
आँखों में था चश्मा लगाया।।
उसके हाथ में था अखबार।
खबरें पढ़ता था दो–चार।।
मेंढक की टोपी हुई चोरी।
बिल्ली गाती प्यारी लोरी।।
भालू दादा ने किया बवाल।
हाल हुआ उनका बेहाल।।
कोयल प्यारे गीत सुनाती।
सबको अपना मित्र बनाती।।
पढ़ते–पढ़ते बन्दर सोया।
सपनों की दुनिया में खोया।।

अशोक कुमार,
सहायक अध्यापक,
कम्पोजिट विद्यालय रामपुर कल्याणगढ़,
विकास खण्ड–मानिकपुर,
जनपद–चित्रकूट।

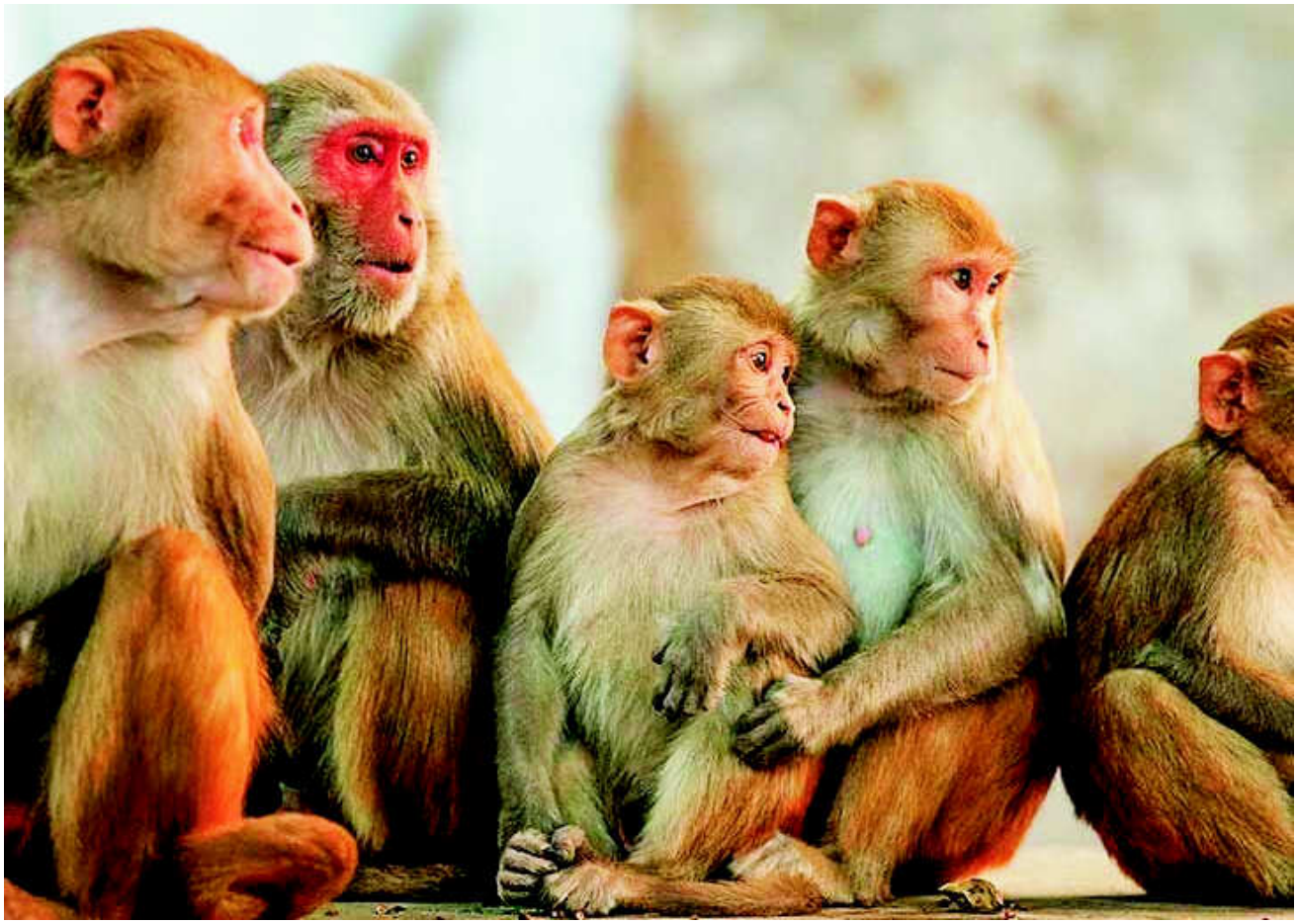

हैंडपंप के द्वारा भूमिगत जल निकालना

टी०एल०एम का नामः–
हैंडपंप के द्वारा भूमिगत जल निकालना
विषयः
हमारा परिवेश
कक्षाः 4, 5
समग्रीः
खाली गत्ता, लोहे की टार, पेंट कलर, फेविकोल, थर्माकोल, कैंची आदि।
बनाने की विधिः–
प्लेट के आकार में थर्माकोल को काट लेंगे, गत्ते को छोटे–छोटे चार पीस काटके फेविकॉल की सहायता से जोड़ लेंगे हैंडपम्प का आकार बन जायेगा, लोहे की तार को मोड़ते हुए हैंडपम्प का हैंडल तैयार करेंगे, मोटे रंगीन चार्ट पेपर को रोल करके छोटी सी बाल्टी बना लेंगे और वाटर कलर से कलर कर देंगे।
उपयोगिताः–
1.इस टी०एल०एम के द्वारा बच्चों को जानकारी दी गई कि जल ही जीवन है।
2.जल कहाँ से आता है–हैंडपंप के द्वारा भूमिगत जल को निकाला जा रहा है।
3.ग्रामीण क्षेत्र में हैंडपंप से ही जल प्राप्त होता है।
4.दूसरी तरफ इस बात की जानकारी देना कि जमीन के अंदर पानी की स्तर को बनाए रखने के क्या उपाय हों।
5.हैंडपंप से पीने के लिए साफ शुद्ध पानी प्राप्त होता है।

सुमन कुशवाहा,
प्रधानाध्यापक, प्राथमिक विद्यालय भगवानपुर,
विकास खण्ड–नेवादा,
जनपद–कौशाम्बी।

Models of alphabet

शिक्षण संवाद

TLM name - Models of alphabet (A-Z)
Class -Primary
Subject - English
Used materials -
Charts, hard sheets, colourful pens, water colours, Fevicol etc.
How to make -
Sketch and colour all alphabet separately and fix them with hard sheet to make them as model. Use - To make learning very interesting and fun with joyful and play way method.

Gulafshan
Assistant Teacher
Primary School Kewtra Benta,
Block – Deomai
District – Fatehpur.

English Medium Diary

ENGLISH MEDIUM SCHOOL OF BASIC EDUCATION

English Medium Government Schools: A new horizonEnglish is a global language. It is widely accepted as a medium of communication and instruction. It is a West Germanic language which was first spoken in early medieval England and gradually became the leading language of international discourse in today's world. English is a rich language in terms of meanings, opinions and vocabulary, containing synonyms more than any other language.Due to its status as an international and third most spoken language, English adopts foreign words quickly, and borrows vocabulary from many other sources.The scenario of today's era marks the need for English based schooling for all the children. And keeping this in mind, the Central and State government's resolution to establish and propagate English Medium Schools marked a tremendous change in the entire Indian history. The students are being taught English at the basic level from their primary classes for increasing efficiency, fluency, and proficiency in the language for communication and study.Basic Education Department has taken an important step to make government school-students more capable by starting English Medium Schools. It will provide more opportunities to explore their abilities and capabilities to enrich their knowledge. English medium schools provide an added advantage of English activities like story telling, debates, poem writing, slogan writing, etc. This in turn develops the learning insights of a child who takes active interest in doing the activities.It also results in increased

attendance of the students who are getting themselves enrolled in the English medium government schools due to the inability of the parents to afford the expensive education for their children. Some more initiatives should be taken to ensure that Upper Primary Schools also get themselves affiliated to English medium so that students can continue their quality education in English medium. Overall, it is very good step to make the students more confident in the language and will take them to another pleasant horizon of life...

Meena Bhatia
Assistant Teacher,
Primary School Dadha,
Block- Dankaur,
District- Gautam Buddha Nagar.

प्रेरक प्रसंग

शकुन्तला देवी (मानव कम्प्यूटर)

शिक्षण संवाद

शकुन्तला देवी एक महान लेखिका और एक जीवित कम्प्यूटर थीं। उनका जन्म बंगलुरू के एक कन्नड़ ब्राह्मण परिवार में 4 नवम्बर 1929 में हुआ था। उनके पिता सी०वी०सुन्दर राजा राय एक महान कलाकार और सर्कस में जादूगर थे। उन्होंने अपनी पुत्री की स्मरण शक्ति की अद्भुत क्षमता को सर्वप्रथम खोजा। उन्होंने जान लिया कि वो एक विलक्षण प्रतिभा से सम्पन्न हैं।

शकुन्तला देवी ने अपने पिता को तब आश्चर्यचकित कर दिया जब 3 वर्ष की इस बच्ची ने ताश के पत्तों की एक जादुई ट्रिक को सीख लिया। उनके पिता इस बात से और भी आश्चर्यचकित थे कि वे उनसे हर खेल में जीत जाती थी।

बिना किसी औपचारिक शिक्षा के उन्होंने गणित के कई सिद्धान्तों को मैसूर की यूनिवर्सिटी

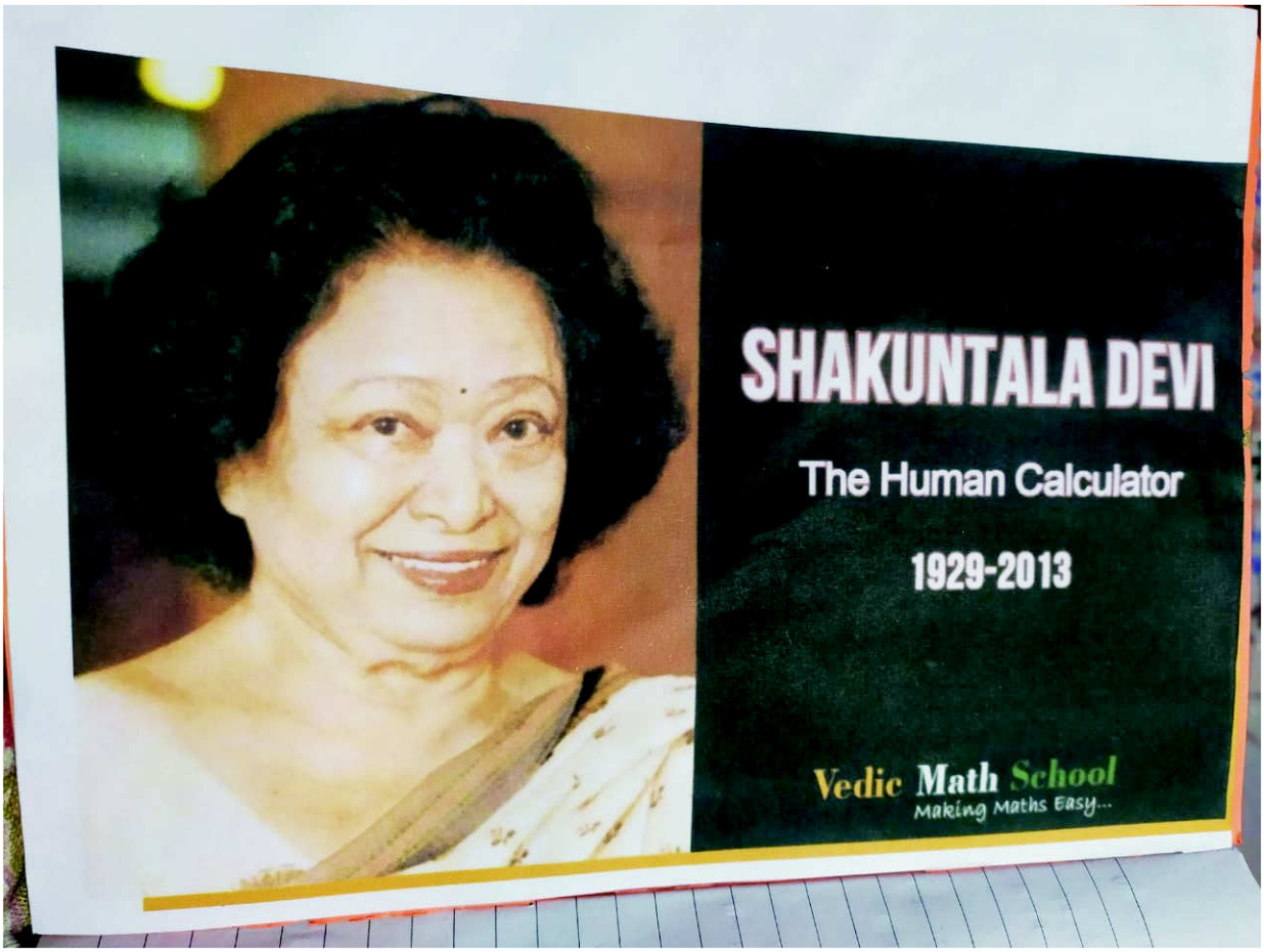

में सिद्ध किया।

शकुन्तला देवी लम्बी गुणन, घनमूल, वर्गमूल में सिद्धहस्त थीं। 1988 में एक मनोवैज्ञानिक आर्थर बार्कर ने शकुन्तला देवी की प्रतिभा को परखने का प्रयास किया और शकुन्तला ने 95, 443, 993 का घनमूल 2 सेकेण्ड में निकाल कर दिखा दिया जिससे सारा संसार आश्चर्य में पड़ गया।

उनका नाम तब गिनीज बुक में दर्ज हुआ जब 1982 में उन्होंने मात्र 28 सेकण्ड में 13 अंकों की संख्या का गुणा किया। वह 20वीं शताब्दी की किसी भी तारीख का दिन बता सकती थीं।

उन्होंने अपने जीवन के अन्तिम वर्षों में अनेक क्षेत्रों के विषय में जैसे– गणित, ज्योतिष, मानव व्यवहार, पहेलियाँ आदि पर अनेक पुस्तकें लिखी हैं।

उनकी पुस्तक द वर्ड ऑफ होमोसेक्सुअल भारत में समलैंगिगता को समझने व समझाने वाली प्रथम पुस्तक मानी जाती है। शकुन्तला देवी भारत की उन चुनिंदा महिलाओं में से एक हैं जिन्होंने भारत के गौरव को संसार के समक्ष प्रस्तुत किया और विश्व को भारत की प्रतिभा के सामने नतमस्तक कर दिया।

यह महान महिला सन 2013 में 21 अप्रैल को भारतवासियों के हृदय में अमिट छाप छोड़ कर दुनिया को अलविदा कह गयी। परन्तु उन्होंने विश्व को दिखा दिया कि गणित जैसा जटिल विषय कितनी आसानी से समझा जा सकता है।

''मेरा भारतवर्ष है प्रतिभाओं की खान, उनमें से एक हीरा है, जिससे मिलवाऊँ आज। गणित की वो जादूगरनी था शकुन्तला नाम, पाया जन्म बंगलूरू में पिता थे सुन्दर राय। चकित हो गए वो जब शकुन्तला ने दिखलाया चमत्कार। 3 वर्ष की कन्या ने पिता को हराया हर बार। बिना लिए डिग्री कोई हर सिद्धान्त को सिद्ध किया, हो घनमूल या वर्गमूल मिनटों में हल किया। जितनी चाहे परीक्षा लो जीते वो हर बार, अंग्रेजों ने मान लिया उसकी बुद्धि की तलवार। गिनीज बुक में दर्ज हुआ ''82'' में उसका नाम, 13 अंकों की गुणा सेकण्डों में काम तमाम। खेल–खेल में प्रश्नों को करती थी वो ऐसे हल, जैसे गणित के बिना न रह सकेगी पल भर। भारत की इस बेटी ने खूब नाम कमाया, लड़के ही गणित में बेहतर उसने ये झुठलाया।''

हिमानी भटनागर,
सहायक अध्यापक,
कन्या पूर्व माध्यमिक विद्यालय
रू० न० सहसपुर,
विकास खण्ड–बिलारी,
जनपद–मुरादाबाद।

प्रेरक प्रसंग

शकुन्तला देवी (मानव कम्प्यूटर)

मानव कंप्यूटर के नाम से विख्यात गणितज्ञ शकुन्तला देवी गणितज्ञ होने के साथ एक सामाजिक कार्यकर्त्ता और लेखक भी थीं। शकुन्तला देवी का जन्म 4 नवम्बर १९२९ को बेंगलोर में हुआ था।

वर्ष १९८०–९० के दशक में भारत के गाँव और शहरों में यदि कोई बच्चा गणित में होशियार हो जाता था तो उसके बारे में कहा जाता था कि वह शकुन्तला देवी बन रहा है। इन्ही बातों से उनके महान व्यक्तित्व का अंदाजा लगाया जा सकता है।

१५ वर्ष की उम्र में बीबीसी रेडियो के कार्यक्रम के दौरान इनसे अंकगणित का एक जटिल सवाल पुछा गया तो उन्होंने तुरंत ही जवाब दे दिया। इस घटना की सबसे मजेदार बात यह रही कि शकुंतला देवी ने जो जवाब वो एकदम सही था जबकि रेडियो प्रस्तोता का जबाव गलत था।

ऐसा ही एक प्रसंग वर्ष १९७७ का है जब अमेरिका की एक यूनिवर्सिटी में इनका मुकाबला युनिबैक कंप्यूटर से हुआ। इस मुकाबले में शकुन्तला को मानसिक गणना से २०१ अंकों की एक संख्या का २३वाँ मूल निकालना था। यह सवाल हल करने में उन्हें ५० सेकंड लगे जबकि युनिबैक ने ६२ सेकंड का समय लिया।

ऐसी महान गणितज्ञ शकुन्तला देवी ने गणित विषय भारत का नाम रोशन किया।

विनीत शर्मा,
इं0 प्रधानाध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय केशोराय, विकास खण्ड–टूंडला,
जनपद–फिरोजाबाद।

बाल कहानी

समाधान

शिक्षण संवाद

सब बच्चे जब सुबह स्कूल जा रहे होते तो पुष्पा बहुत ललक से उन्हें देख रही होती। जब साथ के बच्चे उसे बुलाते तो मजबूरीवश उसे कहना पड़ता तुम लोग चलो अभी मुझे थोड़ी देर लगेगी।

अध्यापक उसे समझाकर कक्षा में बैठने की अनुमति दे देते। इस समस्या पर जब भी अध्यापक पुष्पा की माँ से बात करते तो वह सौ मजबूरियाँ सुना देती। पुष्पा की माँ कभी बीमार होने का तो कभी खेत में काम होने का ऐसा रोना रोती कि पुष्पा की पढ़ाई अध्यापकों के लिए चिन्ता का विषय बन जाती।

पर संसार में सभी समस्याओं का समाधान है। अध्यापकों ने समस्या को ही समाधान बना लिया। इस बार की 26 जनवरी को अध्यापकों ने पुष्पा की माँ को कठिनाइयों में भी पुष्पा को प्रतिदिन विद्यालय भेजने का पुरस्कार दिया। हुआ यूँ ही कि पुष्पा की बड़ी बहन अपनी ससुराल से कुछ दिन के लिए मायके आयी हुई थी, जो घर के काम कर देती और पुष्पा समय से स्कूल जा पा रही थी। पुरस्कार पाकर पुष्पा की माँ को बहुत खुशी महसूस हो रही थी। वह बड़े गर्व से अपनी बड़ाई आसपास के लोगों और रिश्तेदारों से बता रही थी।

अचानक उसे भान हुआ कि उसे अभी इतनी खुशी मिल रही है तो कल को पुष्पा कुछ बन जाएगी तो पुष्पा को कितनी खुशी मिलेगी। उसे कितनी खुशी महसूस होगी। कैसे उसका परिवार गर्व से भर जाएगा। अब वह तय कर चुकी थी कि पुष्पा की पढ़ाई में वह अब कोई बाधा नहीं आने देगी।

ऋतु दुबे,
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय अण्डतारा,
विकास खण्ड–अमानीपुर,
जनपद–अयोध्या।

बाल फिल्म

अनोखा अस्पताल

(संवेदनशीलता की पोषक रोचक बाल फिल्म)

जंगल, हाथी आदि जानवर, प्यारी दादी, जासूसी का रोमांच और सुखद अंत, एक प्रभावी बाल फिल्म के सभी आवश्यक तत्व इसमें मौजूद हैं।

फिल्म की कहानी एक डॉक्टर की वृद्धा माँ के इर्द गिर्द घूमती है। जिन्होंने अपना जीवन बेजुबानों की देखभाल को समर्पित कर दिया है। उनका पोता शहर से आता है अपनी दादी के जंगल वाले घर में जहाँ वो चलाती हैं एक अनोखा अस्पताल। लेकिन जंगल में घुसे हैं कुछ शिकारी। क्या वो शिकार कर पायेंगे? पकड़े जाएँगे या उनका हृदय बदलेगा? जंगल के दृश्य और मासूम प्यारे जज्बाती रिश्ते दर्शक को बाँधे रहते हैं। फिल्म की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें जानवरों के प्रति आत्मीयता का इतना मार्मिक फिल्मांकन है कि वह संवेदनशीलता के सतही उपदेश से भी कई गुना अधिक प्रभावी बनकर बच्चों के अंतर्मन में सहज ही पशुओं के प्रति सहानुभूति विकसित करने की क्षमता रखता है।

समीक्षक
प्रशान्त अग्रवाल,
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय डहिया,
विकास क्षेत्र फतेहगंज पश्चिमी,
जनपद–बरेली।

कंचे का खेल

शिक्षण संवाद

कंचे खेलना बच्चों को बहुत पसंद हुआ करता था। लेकिन आजकल बच्चों ने इस खेल को खेलना बहुत कम कर दिया है। पहले गाँव हो या फिर शहर सभी जगह पर काँच के रंग–बिरंगे कंचे खेलना बच्चों को बहुत अच्छा लगता था। अब यह खेल बहुत कम खेला जाता है। इस खेल में एक कंचे से दूसरे कंचे पर बड़ी सावधानी से निशाना लगाया जाता है।

खेल से लाभ –

बच्चों में एकाग्रता की क्षमता का विकास होता है।
उंगलियाँ मजबूत होती हैं।
बाह्य वातावरण से जुड़े रहते हैं।
मोबाइल से भी दूर रहते हैं। जो आँखों के लिए हानिकारक है।

सन्नू नेगी,
सहायक अध्यापक, राजकीय कन्या जूनियर हाईस्कूल सिदोली,
विकास क्षेत्र–कर्णप्रयाग,
जनपद–चमोली, उत्तराखण्ड।

योग-विशेष

अस्थमा या श्वांस या दमा रोग में योग आसन व प्राणायाम का महत्व

शिक्षण संवाद

ठंड एवं वायु प्रकोप के कारण श्वांस नलिकाओं में सिकुड़न की वजह से श्वांस वायु के आवागमन में बाधा उत्पन हो जाने के कारण श्वांस लेने में कष्ट उत्पन्न होता है, इसे श्वांस रोग, दमा रोग या अस्थमा कहते हैं। इस रोग के लक्षण इतने अधिक कष्टकारी होते हैं कि रोगी को पलभर के लिए चैन नहीं मिल पाता है। लेटते समय श्वांस लेने में तकलीफ, बैठने पर भी राहत नहीं मिलती और रोगी बैचेन रहता है।

"दमा—दम के साथ जाता है।"

"दमा रोग तो मृत्यु तक रहता है।"

"दमा रोग को पूणतया ठीक नहीं किया जा सकता है।"

ये पुरानी कहावत थी जो योगासन व प्राणायाम से गलत सिद्ध हो रही है। योग की प्राचीन कला वास्तव में आपके श्वांस की समस्या का सबसे अच्छा समाधान है। अस्थमा को दूर करने में सहायक आसन और प्राणायाम—

अस्थमा पर अधिक प्रभावी ढंग से काबू पाने वाले योगासन व प्राणायाम निम्न हैं—

1. अर्धमत्स्येद्रासन
2. पवनमुक्तासन
3. सेतुबंधासन
4. भुजंगासन
5. धनुरासन
6. सूर्य नमस्कार
7. ताड़ासन
8. त्रिकोणासन
9. योग मुद्रा
10. शवासन
11. अनुलोम विलोम प्राणायाम
12. वक्षस्थल प्राणायाम
13. भस्त्रिका प्राणायाम
14. कपाल भाति प्राणायाम
15. नाड़ी शोधन प्राणायाम

इसके अलावा मेडिटेशन भी इसमें काफी मदद करता है। गहरी लंबी श्वांस हमारे फेफड़ों का अधिकतम क्षमता तक इस्तेमाल करती है और हमें सही ढंग से श्वांस लेना

सीखने में मदद करती है।

योग द्वारा उपचार व घरेलू उपचार

1. सप्ताह में एक दिन गर्म या गुनगुने पानी से कुंजल करने से बलगम बाहर निकलता है। साथ ही साथ प्रतिदिन जलनेति एवं भस्त्रिका करने से शीघ्र लाभ मिलता है।
2. हरड़ और हल्दी का चूर्ण बराबर मात्रा में मिलाकर प्रतिदिन योगाभ्यास के बाद गुनगुने जल के साथ सेवन करने से लाभ मिलता है।
3. प्रतिदिन जल में अजवाइन व युकिलिप्टस के पत्ते डालकर भाप लेने से शीघ्र लाभ मिलता है।
4. तुलसी रस में शहद मिलाकर या दालचीनी पाउडर में शहद मिलाकर लेने से लाभ मिलता है।
5. सूखा आंवला व मुलेठी बराबर पीसकर रख लें व कुछ मात्रा जल के साथ लेने से बलगम साफ होता है व लाभ मिलता है।

अस्थमा मरीजों का आहार–

अस्थमा और मोटापा एक दूसरे से जुड़े हुए हैं और मरीज का वजन स्वस्थ और सामान्य रहता है तो अस्थमा अटैक कम होता है। अगर वजन बढ़ने लगे तो अस्थमा अटैक भी बढ़ जाता है। इसलिए मरीज को अपने खानपान पर ध्यान देना चाहिए। ताज़े फल – ताज़े फल एंटी आक्सीडेंट और बीटा कैरोटीन का स्त्रोत होते हैं। कीवी और संतरे जैसे फलों में बहुत अधिक विटामिन सी और ई पाया जाता है।

हरी सब्जियाँ :– अस्थमा मरीज को हरी व पत्तेदार सब्जियाँ खानी चाहिए। इनमें बहुत अधिक मात्रा में विटामिन और फ्लेवोनॉयड्स होते हैं जो शरीर में मुक्त कणों को नष्ट करते हैं क्योंकि मुक्त कण शरीर में पाए जाने वाले टॉक्सिंस होते हैं जो अस्थमा को और अधिक बढ़ा सकते हैं।

3. सूखे मेवे :– सूखे मेवों में मैग्नीशियम और विटामिन ई पाया जाता है जो अस्थमा मरीजों के लिए अच्छा है। विटामिन ई इम्यूनिटी बढ़ाता है। साथ ही साथ शरीर की मुक्त कणों से रक्षा करता है जो शरीर में ऊतकों को नुकसान पहुँचाकर उनमें सूजन पैदा कर सकते हैं।
4. साबुत अनाज :– साबुत अनाज के सेवन से अस्थमा होने की संभावना 50% तक कम हो जाती है।
5. दालें :– दालों में कैलोरी व फैट कम होता है जो अस्थमा में फायदेमंद है। दालों में फैट को घोलने वाले कण पाए जाते हैं जो अस्थमा के कारण होने वाले जुकाम और फ्लू के बैक्टीरिया को आने से रोकते हैं।

शिल्पी गोयल,
सहायक अध्यापक,
उच्च प्राथमिक विद्यालय निजामपुर,
विकास क्षेत्र–सिकंदराबाद,
जनपद–बुलंदशहर।

Xodo ऐप

शिक्षण संवाद

किसी पी.डी.एफ. फाइल को ऐडिट करने या ई–बुक का निर्माण करने के लिए xodo ऐप बहुत ही अच्छा है। इस ऐप के माध्यम से हम अपनी पी.डी.एफ. फाइल पर जाकर विभिन्न प्रकार के टूल्स जैसे टैक्स टूल, हाइलाइट, अण्डरलाइन, ऐरोज आदि ऐप्लाई कर सकते हैं और साथ ही अपनी पी.डी.एफ. फाइल में किसी जगह विशेष पर कोई भी लिंक कॉपी पेस्ट कर सकते हैं। जहाँ टच करने पर वह लिंक (जैसे यू–ट्यूब लिंक, ट्विटर लिंक, फेसबुक लिंक आदि) ओपन हो जाती है।

रूपम सक्सैना,
सहायक अध्यापक
प्राथमिक विद्यालय दरिगपुर,
विकास खण्ड– शीतलपुर,
जनपद– एटा।

Xodo PDF Reader & Editor

Xodo Technologies Inc.

सदविचार

जमनालाल बजाज

(जन्म–4 नवम्बर 1889 – 11 फरवरी 1942)

भारत के एक उद्योगपति, मानवशास्त्री एवं स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे। वे महात्मा गांधी के अनुयायी थे तथा उनके बहुत करीबी व्यक्ति थे। गांधीजी ने उन्हें अपने पुत्र की तरह माना।. जमनालाल बजाज ''सादा जीवन, उच्च विचार'' के समर्थक थे। वे संपन्न उद्योगपति होते हुए भी सादगी से रहते थे और अपना धन गरीबों के हित में लगा देते थे।

जमनालाल बजाज खादी और स्वदेशी अपनाते थे क्योंकि यह देश के आर्थिक उन्नति में सहायक था। उन्होंने अपने वेशकीमती वस्त्रों की होली जला दी थी। अखिल भारतीय कोषाध्यक्ष की हैसियत से खादी के उत्पादन और उसकी बिक्री बढ़ाने के विचार से देश के दूर–दराज भागों का दौरा किया ताकि अर्धबेरोजगारों को फायदा पहुँच सके। 1935 में गांधी जी ने अखिल भारतीय ग्रामोद्योग संघ की स्थापना की। इस नये संघ के लिए जमनालाल बजाज ने बडी खुशी से अपना विशाल बगीचा सौंप दिया जिसका नाम गांधी ने जी स्वर्गीय मगनलाल गांधी के नाम पर मगनाडी रखा।

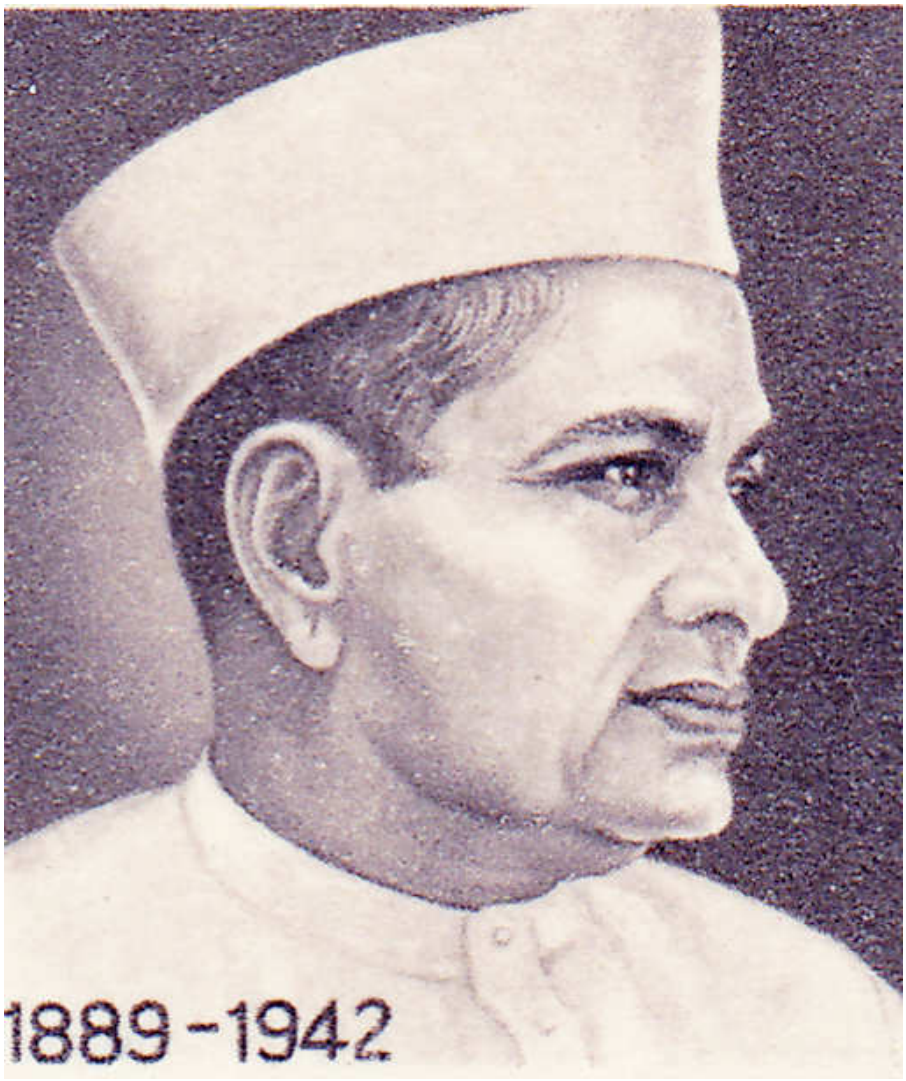

जमनालाल जी ने अपने बच्चों को किसी फैशनेबल पब्लिक स्कूल में नही भेजा बल्कि उन्हें स्वेच्छापूर्वक वर्धा में आरम्भ किये गये विनोबा के सत्याग्रह आश्रम में भेजा क्योंकि जो संस्कार देसी स्कूल दे सकते हैं, वे पब्लिक स्कूल कभी नहीं दे सकते। जमुना लाल जी यह कभी नहीं चाहते थे कि उनकी पद प्रतिष्ठा के आधार पर उनकी पत्नी और बच्चों को जाना जाए बल्कि वे चाहते थे कि उनकी पत्नी और बच्चे अपनी योग्यता, क्षमता के आधार पर समाज में अपना स्थान निर्धारित

करें और उसके आधार पर उनको जाना जाए। 1922 में अपनी पत्नी को लिखे एक पत्र में उन्होंने कहा कि ''मैं हमेशा से यही सोचता आया हूं कि तुम और हमारे बच्चे मेरे ही कारण किसी प्रकार की प्रतिष्ठा अथवा पद प्राप्त न करें। यदि कोई प्रतिष्ठा अथवा पद प्राप्त हो तो वह अपनी–अपनी योग्यता के बल पर हो। यह मेरे, तुम्हारे, उनके सबके हित में है।''

जमुनालाल बजाज ने राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिए काफी काम किया क्योंकि हिंदी भारत की जनता को एक सूत्र में पिरोती थी। 1936 में अखिल भारतीय हिंदी साहित्य सम्मेलन नागपुर के बाद तुरंत ही बाद जमनालाल जी ने वर्धा में देश के पश्चिम और पूर्व के प्रांतों में हिंदी प्रचार के लिए, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की स्थापना की तथा उसके लिए राशि इकट्ठा की। इसके कुछ ही समय बाद वह हिन्दी साहित्य सम्मेलन मद्रास के अध्यक्ष चुने गये। अपने इस पद का उपयोग उन्होंने राष्ट्रभाषा आंदोलन को व्यवस्थित रूप देने की दिशा में किया।

जमनालाल जी मनुष्य–मनुष्य में भेद नहीं करते थे। इस आधार पर वे छुआछूत, भेदभाव में विश्वास नहीं करते थे। वास्तव में वे देश के प्रथम नेता था, जिन्होंने वर्धा में अपने पूर्वजों के लक्ष्मीनारायण मंदिर के द्वार 1928 में ही अछूतों के लिए खोल दिये थे। साथ ही वे हिंदू–मुस्लिम में एकता पर बहुत बल दिया करते थे।

मिहिर यादव,
सहायक अध्यापक(विज्ञान),
कंपोजिट उच्च प्राथमिक विद्यालय पाण्डेयपुर,
विकास खण्ड–मुंगराबादशाहपुर,
जनपद–जौनपुर।

हम खुद ही बन गए अभिभावक

शिक्षण संवाद

नवाचार से तात्पर्य ऐसे विचार से है जो हम सभी के विद्यालय में विद्यार्थियों को लाभान्वित कर सके एवं उनकी शैक्षणिक समस्याओं का समाधान कर सके। ऐसे ही नवाचार के अंतर्गत प्राथमिक विद्यालय मरगूबपुर, ब्लॉक बुलंदशहर में हम शिक्षकों के समक्ष एक बड़ी चुनौती थी कि अधिकांश अभिभावक श्रमिक वर्ग से थे जो कि सुबह–सुबह घर में ताला बंद करके काम पर चले जाया करते थे। अभिभावक इस बात से बेखबर कि बच्चे दिन में कहाँ रहेंगे, क्या खाएँगे, क्या पढ़ेंगे। बच्चे घर से बाहर और बैग भीतर। जब हम शिक्षक मोबाइल पर संपर्क करने की कोशिश करते थे तो या तो माता– पिता फोन नहीं उठाते थे या फिर बच्चे के बारे में पूछने पर कहते थे गाँव में खेल रहे होंगे। इस समस्या के समाधान हेतु हम सबने सर्वप्रथम ऐसे बच्चों की एक सूची बनाई जिनके माता–पिता बच्चों पर बिल्कुल ध्यान नहीं दे रहे थे। इस समस्या से जूझ रहे 40 बच्चे हमने चिन्हित किए। हमारे विद्यालय में हम 8 शिक्षक हैं। हम सभी ने इन बच्चों में से अपनी इच्छा अनुसार 5–5 बच्चों को गोद ले लिया। बस फिर क्या था, हमारी समस्या को समाधान मिल गया, जब हम खुद ही अभिभावक बन गए तो सभी कार्य अब हमें खुद ही करने थे। हमने बच्चों के स्कूल बैग विद्यालय में ही रखने के लिए एक अलमारी खाली की और प्रतिदिन विद्यालय के बाद उनके स्कूल बैग वहीं रखने प्रारंभ किए। अब हमें अपने बच्चों के ना केवल शैक्षणिक बल्कि शारीरिक एवं संवेगात्मक पक्ष पर भी ध्यान देना था। इसके लिए हमने बच्चे से कक्षा के बाहर विद्यालय परिसर में बातचीत करके उसकी आवश्यकताएँ, उसकी मानसिक स्थिति, शैक्षणिक बाधाएँ एवं संवेगात्मक पक्ष को जानने का प्रयास किया। इस प्रकार जब हम सभी शिक्षक इन बच्चों के साथ उनके अभिभावकों की तरह जुड़ गए तो बच्चों के व्यक्तित्व में सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिलने लगे। बच्चों के आत्मविश्वास में वृद्धि होने लगी एवं शिक्षा का स्तर सुधरने लगा। अभिभावकों से सहयोग ना मिलने की समस्या का भी समाधान हो गया। सबसे अच्छी बात यह रही कि आज इन बच्चों के अभिभावक खुद भी रुचि लेने लगे हैं क्योंकि अब उन्हें भी बच्चों की स्थिति में परिवर्तन नजर आ रहा है। हम शिक्षकों द्वारा अपने गोद लिए गए बच्चों की टीम को टाइटल भी दिया गया। जैसे मेरे समूह का नाम है टीम बाहुबली इसी प्रकार से अन्य सभी अध्यापकों की भी अपनी–अपनी टीम है। बच्चों से हम शिक्षक तब तक जुड़े रहेंगे जब तक कि यह बच्चे अपनी शिक्षा पूरी करके आत्मनिर्भर नहीं हो जाते या जब तक इनको हमारी आवश्यकता होगी। संभव है जीवन में एक ऐसा भी समय आए जब हमें भी अपने द्वारा लगाए इन वृक्षों की छाया में बैठने का अवसर मिले और तब हमें इन बच्चों पर और भी अधिक गर्व होगा। इस प्रकार प्राथमिक विद्यालय मरगूबपुर द्वारा किया गया यह प्रयास अपने आप में एक अनूठा नवाचार है जिससे कि न केवल विद्यालय के शैक्षणिक स्तर में सुधार हुआ है वरन् समाज में अच्छे नागरिकों के निर्माण की दिशा में यह एक सकारात्मक कदम है।

डॉ0 सुकीर्ति अग्रवाल
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय मरगूबपुर,
विकास खण्ड व जनपद–बुलंदशहर

मन की बात व सुझाव पेटिका

उपयोगी सामग्री –पैकिंग का गत्ते या कोई पेटी स्केच पेन,मार्कर,रंगीन पेपर आदि।
उपयोग की विधि– विद्यालय में हो रही मासिक अभिभावक बैठक व पर्यवेक्षण हेतु आए माननीय गणमान्य लोगों से विद्यालय के संबंध में किए जा रहे कार्यों के बारे में मन की बात व अपने सुझाव लिखित रूप से लेकर मन की बात का सुझाव पेटिका में डाले जाते हैं। जिससे विद्यालय में विकास कार्य और भी अच्छे से हो सकें साथ ही बच्चों के शैक्षिक प्रगति में सुधार किया जा सके। ऐसे मत प्राप्त करना होता है प्रतिमाह होने वाली विद्यालय प्रबंध समिति बैठक में आए सुझाव को पढ़कर समिति के सम्मुख रखा जाता है। साथ ही आगे की कार्य योजना तय करने में सहयोग प्राप्त किया जाता है। जिससे विद्यालय में और भी आवश्यक सुधार किए जा सकें।
'लाभ–' विद्यालय निरंतर प्रगति की ओर अग्रसर होता है बच्चों की शैक्षिक प्रगति हो या विद्यालय का कायाकल्प।सामुदायिक सहभागिता व अभिभावकों का रुझान विद्यालय की ओर बढ़ता है।

सुमन पांडेय(प्र०अ)
प्रा०वि०टिकरी मनौटी
शिक्षा क्षेत्र–खजुहा, जनपद–फतेहपुर

गतिविधि

दिशाओं का ज्ञान

शिक्षण संवाद

कक्षा 3 से 5 तक
लगने वाला समयः– 30 मिनट
स्थानः–प्रार्थना सभा या मैदान
उद्देश्यः– बच्चों को चारों दिशाओं के बारे में जानकारी देना।

गतिविधि

यह गतिविधि प्राथमिक स्तर की है और बच्चों के लिए बहुत ही रोचक एवम लाभकारी है। इस गतिविधि को कराने के लिए सबसे पहले बच्चों को पंक्तियों के अनुसार अनुशासित रूप से व्यवस्थित करा लेंगे तथा 3 बच्चों को बाहर निकाल लेंगे मॉनिटर के रूप में जिसकी गतिविधि को देखकर अन्य बच्चे अनुकरण कर सकें। अब सबसे पहले शिक्षक बच्चों को गतिविधि के माध्यम से चारों दिशाएँ बताऐंगे। अपने दोनों हाथ आगे की ओर फैलाकर जिसको देखकर बच्चे भी बोलेंगे तथा अनुकरण करेंगे। उसके बाद बच्चों को यह बताएँगे कि यदि आप सभी अपना मुख सूरज की ओर करके खड़े होते हैं तो ठीक सामने जो दिशा होती है उसे पूरब दिशा कहते हैं एवम पीठ पीछे की दिशा पश्चिम होती है जिसका अनुकरण छात्र करते जाते हैं। ठीक इसी प्रकार अगले क्रम में बच्चों को यह बताएँगे कि आप के बाएँ हाथ की ओर जो दिशा होती है वो उत्तर होती है एवम दाएँ हाथ की ओर जो दिशा होती है वो दक्षिण होती है। इस प्रकार बच्चों को सामान्य दिशाओं की जानकारी भली–भाँति हो जाती है यह गतिविधि बहुत ही रोचक एवम प्रभावशाली है। छोटे बच्चे बहुत जल्दी इससे सीखते हैं एवम ज्ञान का स्थायित्व बना रहता है।

नवाचार का आधार

इस नवाचार का आधार पूर्णतया खेल विधि पर आधारित है जिससे बच्चे खेल–खेल में सीखते हैं। इस गतिविधि के उपयोग से बच्चो में सीखने के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न होती है और बच्चे चारों दिशाओं के प्रति भली–भाँति जानकारी प्राप्त कर लेते हैं।

श्रेया द्विवेदी,
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय देवीगंज प्रथम,
विकास खण्ड–कड़ा,
कौशाम्बी।

मिशन शिक्षण संवाद

डिस्क्लेमरः— मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका शिक्षण संवाद बेसिक शिक्षा के शिक्षकों का आपसी सीखने—सिखाने का स्वैच्छिक और स्वयंसेवी साझा प्रयास है। इस पत्रिका में अनमोल रत्न शिक्षकों के विवरण, शिक्षकों के लेखों, बाल कविताओं, बाल कहानियों से लेकर महापुरुषों के विचार, अधिकारीगण के लेख और सामान्य ज्ञान के प्रश्न भी सम्मिलित हैं। इस पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख, कविता की मौलिकता और तथ्यात्मकता के लिए सम्बंधित स्तम्भकार उत्तरदायी होगा। यद्यपि पत्रिका में प्रकाशित सभी स्तम्भों में उच्चकोटि की गुणवत्ता का ध्यान रखा गया है तथापि किसी भी तथ्य के लिए संपादक मंडल दावा नहीं करता है। किसी भी सुझाव या शिकायत के लिए मिशन के ईमेल shikshansamvad@gmail.com या व्हाट्सएप्प नम्बर—9458278429 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

1. फेसबुक पेजः http://m.facebook.com/shikshansamvad/
2. फेसबुक समूहः http://www.facebbook.com/groups/118010865464649
3. मिशन शिक्षण संवाद ब्लॉगः https://www.shikshansamvad.blogspot.in
4. ट्विटर एकाउण्टः https://twitter.com/shikshansamvad
5. यू—टयूबः https://www.youtube.com/channel/UCPbbM119CQuxLymELvGgPig
6. व्हाट्सएप नं0 : 9458278429
7. ई मेलः shikshansamvad@gmail.com
8. टेलीग्रामः https://t.me/missionshikshansamvad
9. वेबसाइटः www.missionshikshansamvad.com

विमल कुमार

मिशन शिक्षण संवाद